પથ્થર

પથ્થર

33

संस्थापक संपादक : दूधनाथ सिंह : 1975

पक्षधर

प्रतिरोध की संस्कृति का रचनात्मक हस्तक्षेप

वर्ष : 16 अंक : 33 जुलाई-दिसम्बर, 2022

संपादक

विनोद तिवारी

संपादन सहयोग

आशीष मिश्र • पंकज बोस

अजय आनंद • सूरज त्रिपाठी

अक्षर संयोजन

कम्प्यूटेक सिस्टम
ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32
आवरण : अंतरिक्ष चौहान

मूल्य :

एक प्रति : ₹ 150 (व्यक्तिगत) ₹ 200 (संस्थागत)
सदस्यता :
वार्षिक (व्यक्तिगत) : ₹ 350 (डाक खर्च सहित)
वार्षिक (संस्थागत) : ₹ 400 (डाक खर्च सहित)
पंचवार्षिक : ₹ 2000
आजीवन : ₹ 5000
विदेश के लिए : $ 100

भुगतान हेतु बैंक-खाता विवरण :
A/c Name / No. : Pakshdhar / 31266280438
Bank : SBI / IFSC-SBIN0001067

संपादन/प्रकाशन : अवैतनिक/अव्यावसायिक

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक **विनोद तिवारी, सी-4/604, ऑलिव काउंटी, सेक्टर-5, वसुंधरा, गाजियाबाद-201012** के लिए बी.के. ऑफसेट, एफ-93, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 से प्रकाशित और मुद्रित।

प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। संपादक और लेखक की अनुमति के बिना प्रकाशित सामग्री के किसी भी तरह के उपयोग की अनुमति नहीं होगी।

सम्पर्क :

सी-4/604, ऑलिव काउंटी, सेक्टर-5,
वसुंधरा, गाजियाबाद-201012
मो. 09560236569
ई-मेल : pakshdharwarta@gmail.com
वेब पता : www.pakshdhar.com

PAKSHDHAR : **ISSN :** 2231-1173
A Bi-Annual Literary Magazine
Editor : Vinod Tiwari
Language : Hindi

अनुक्रम

संपादकीय

साहित्य, बाज़ार, लेखक और प्रतिरोध 5

एक कवि : एक राग

पाँच कविताएँ : **नरेश सक्सेना** 17

कविता लोकगीत की तरह सरल होनी चाहिए 20
(**नरेश सक्सेना** से **बिपिन तिवारी** और **अभिषेक गुप्ता** की बातचीत)

लेख

पढ़ि (सुनि) आचरज करै जनि कोई *(अमृत राय और प्रेमचन्द)* : **श्रीनारायण पाण्डेय** 41

एक बार फिर देश की बात : **रणजीत साहा** 47

हमारा समय और उसकी चुनौतियाँ : **गोपाल प्रधान** 59

आदिमता की जैविक फसलें अर्थात् कविता का असुर पक्ष : **अनुज लुगुन** 67

लंबी कहानी

सीमिया : **नैयर मसूद** 80
(अनु. आयशा आरफ़ीन)

कहानियाँ

पाशा बाबा : **प्रियंवद** 131

कुत्ता-बिल्ली : **मो. आरिफ** 138

लाल गुंजे का बटुआ : **उपासना** 154

उपन्यास-अंश

बयाबाँ (समय-समाज के निर्मम 'अरण्य' का आख्यान) : **राजेन्द्र लहरिया** 165

कविताएँ

छः कविताएँ : **आशीष त्रिपाठी** 206

चार कविताएँ : **मिथिलेश कुमार राय** 221

पाँच कविताएँ : **रवि प्रकाश** 226

चार कविताएँ : **सोमप्रभ** 233

बाहरी दुनिया

इतिहास में औरतें : आदम की तेरहवीं पसली : **नवल अल सदावी** 239
(अनु. सुबोध शुक्ल)

नया वरक़

पाँच कविताएँ : **चाहत अन्वी** 250

पुस्तक समीक्षा

विनाश और विकल्प का आख्यान : 'ढलती साँझ का सूरज' : **शर्मिला जालान** 255

बयान दर्ज़ हुआ है चाँद की गवाही में : **बिभा कुमारी** 259

किरदार ख़ुद उभरकर कहानी में आएगा : **अरुणेश शुक्ल** 264

मुक्तिबोध को समझने की भास्वर 'लालटेन' : **योगेश प्रताप शेखर** 269

गूँजने लगता है आसमान नगाड़े-सा ('ईश्वर और बाजार' कविता संग्रह के संदर्भ में) : **सावित्री बड़ाईक** 275

सृष्टि में मनुष्यता का आलाप : **आनंद पांडेय** 282

साहित्य, बाज़ार, लेखक और प्रतिरोध

जातीय स्मृति के तर्क से और सामाजिक-ऐतिहासिक-राजनीतिक परिवर्तनों और विकास की दृष्टि से भी, किसी भी समय को जानने समझने के लिए उस समय के साहित्य और साहित्यकार के पक्ष को एक जरूरी प्रमाण के रूप में देखा जाना चाहिए। आज हम सब एक ऐसे खंडित समय में जी रहे हैं जिसमें यथार्थ और मिथ्या, वास्तविक और भ्रम, सच और झूठ सबके अपने प्रमाण हैं। ऐसे समय में, आज साहित्य पर, साहित्य के पक्ष पर और साहित्य मात्र पर ही क्यों समूची सांस्कृतिक निर्माण की प्रक्रिया पर बातचीत हमारे समय की ठोस वास्तविकताओं के साथ होनी चाहिए। आज जो सबसे बड़ा सवाल है, वह यह है कि हम साहित्य और साहित्यकार का पक्ष किसके सापेक्ष, किसके बरअक्स तय कर रहे हैं। परंपरा, जातीयता अथवा ऐसी ही किसी कोटि में, किसी पूर्व-निर्धारित 'मूल्य' और 'आदर्श' के सापेक्ष या किसी शाश्वत निरपेक्ष सार्वभौम सम्पूर्ण सत्य के सापेक्ष या नव-उदार पूँजीवादी बाज़ार, माल और मूल्य के सापेक्ष अथवा अपने समय की राजनीतिक-सामाजिक स्थितियों-परिस्थितयों की वास्तविक छवियों के सापेक्ष?

जब यह बात कही जा रही हो तो इसका अर्थ यह कदापि न लिया जाय कि यहाँ समय को निपट वर्तमान के अर्थ में ही देखा-समझा जा रहा है। यहाँ 'समय' विगत के साथ वर्तमान और आगत की चिंता के साथ उपस्थित होता है। वस्तुतः साहित्य के लिए समय वही नहीं होता है, जो हमारा निपट वर्तमान है, वरन् वह समय भी है जो हमें भविष्य में अपेक्षित है। इसलिए भी हमें बहस के लिए प्रस्तावित इस मुद्दे को साहित्य के वर्तमान 'बैलेंस शीट' की तरह तो पढ़ना ही चाहिए, साथ ही इसे एक 'ब्लूप्रिंट' की तरह भी देखा जाना चाहिए। प्रसिद्ध इतिहासकार रजनी पाम दत्त का उल्लेख करना चाहूँगा, वो कहते हैं कि, "जब समाज दोराहे पर खड़ा होता है, जहाँ उसे विकल्प की तलाश होती है, उस समय यदि जनतांत्रिक शक्तियाँ इतनी बलवती होती हैं कि विकल्प दे सकें तो विकल्प मिल जाता है, अगर ऐसा नहीं होता या भटकाव की स्थिति बनी रहती है तो फ़ासीवाद का उदय होता है।" साहित्य हमेशा से ही ऐसे किसी भी 'अधिनायकवाद' अथवा 'फ़ासीवाद' के खिलाफ़ एक समानांतर लोकतान्त्रिक